जून 2016

वर्ष 28 एकादश अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 आयु हमारी सोच में....

विशेष स्तम्भ

12 समसामयिक सामान्य ज्ञान
18 आर्थिक परिदृश्य
21 राज्यों की नवीन योजनाएं
25 राष्ट्रीय परिदृश्य
31 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
33 क्रीड़ा जगत्
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 विज्ञान समाचार
38 सारभूत तत्व कोष
42 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं
45 भारत के पड़ौसी देश

लेख

50 आर्थिक लेख—स्टार्टअप इण्डिया : एक महत्वाकांक्षी योजना
52 समसामयिक लेख—नेपाली प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली की चीन यात्रा : चीन की गोद में नेपाल
53 बैंकिंग लेख—सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों में मुद्रा बैंक की भूमिका
54 पर्यावरणीय लेख—क्लाईमेट जस्टिस (पर्यावरण न्याय)

हल प्रश्न-पत्र

56 उत्तराखण्ड समूह 'ग' कनिष्ठ सहायक व कम्प्यूटर ऑपरेटर परीक्षा, 2016
60 आगामी स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया लिपिकीय संवर्ग प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
70 हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा, 2015
84 इग्नू बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2015
96 रेलवे रिक्रूटमेण्ट बोर्ड (गैर-तकनीकी श्रेणी) परीक्षा, 2016
106 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड (गैर-तकनीकी श्रेणी) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
112 आर.आर.सी. (पटना) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014
119 आगामी मध्य प्रदेश पुलिस आरक्षक (जनरल ड्यूटी) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
125 वार्षिक रिपोर्ट 2014-15 पृथ्वी विज्ञान क्षेत्र में अनुसंधान, विकास, प्रोग्राम्स एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के बढ़ते चरण-एक झलक
128 ज्ञान वृद्धि कीजिए
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

आयु हमारी सोच में....

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

Age is a question of mind over matter. If you don't mind, it doesn't matter.

— Stachel Paige

इस जीवन को देखने के सबके नजरिए अपने-अपने हैं. कोई इसे सुख रूप में देखता है, तो कोई दुःख रूप में परन्तु अधिकांश लोग इसे सुख-दुःख के जोड़े के रूप में देखते हैं. अधिकांश लोग इस जीवन के प्रति व उम्र के हर दौर के प्रति अपना मानसिक नजरिया उधार प्राप्त अनुभवों व सूचनाओं के जरिए निर्मित करते हैं. जैसे कि बुढ़ापे को भयावह व चिंताजनक मानना. यह एक ऐसी नकारात्मक सोच है, जो भारतीय मानसिकता में पाई जाने वाली सामान्य बीमारी है. अधिकांश लोग बुढ़ापे को दुःखरूप ही मानते आए हैं. कहा भी है कि—

''जन्म दुःखं, जरा दुःखं, रोगाणि मरणाणि य।''

अर्थात् जन्म दुःख है, बुढ़ापा दुःख है, रोग और मरण भी दुःख रूप है, किन्तु जीवन को देखने का हम सकारात्मक नजरिया भी अपना सकते हैं. हम जानें कि जीवन का जन्म भी सुख रूप होता है, जब कोई आनंद भावों में जन्म लेता है, मृत्यु भी बोधपूर्वक हो, तो महोत्सव हो जाती है. बुढ़ापा अगर अनुभव और ज्ञान के साथ, उत्साह व सृजनात्मकता के साथ जिया जाए, तो कभी दुःख रूप नहीं होता. दुःख हमारी सोच में है. न केवल दुःख वरन् हमारी उम्र भी हमारी सोच में है. हमारी आयु बढ़ती जा रही है, इसमें कहीं कोई बुराई नहीं है, आयु का बढ़ना स्वाभाविक है, उसे बुढ़ापा व बीमारी का पर्याय मानना हमारी भूल है, क्योंकि मस्तिष्क और आत्मा कभी बूढ़े नहीं होते हैं.

बाइबिल कहती है—

और यह शाश्वत जीवन है, ताकि वे तुम्हें इकलौते सच्चे ईश्वर के रूप में जान सकें. जॉन 17 : 3

जब हम यह जान लेते हैं कि हमारा जीवन शाश्वत है, बदले हुए हर रूप में भी हम सदा थे, हैं और रहेंगे. ऐसा समय कभी न था जब हम नहीं थे, ऐसा समय कभी न होगा जब हम कभी न होंगे. हम सदा से हैं, शरीर की उम्र बढ़ती है, शरीर पहले की तरह दौड़ भाग नहीं सकता, बच्चों की तरह तैर नहीं सकता, छलांग नहीं लगा सकता, तो क्या हुआ ? हर उम्र की अपनी महिमा, सुन्दरता और नियामत होती है. शांति, प्रेम, खुशी, सुन्दरता, ज्ञान, सद्भावना और समझ वे गुण हैं, जो कभी बूढ़े नहीं होते हैं या मरते नहीं हैं.